B.A. Part - 1

Paper - III

भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं :

पुनर्जन्म में विश्वास : चार्वाक दर्शन को छोड़कर सभी भारतीय दर्शन सम्प्रदाय पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। ऐसा इसलिए है कि सभी दर्शन एक शाश्वत चेतन तत्व जीवात्मा में विश्वास करते हैं। यह जीवात्मा ही नित्य, शाश्वत, अमर तत्व है। पुनर्जन्म का अर्थ है: बार बार जन्म लेना। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक जीवात्मा मोक्ष की प्राप्ति नहीं कर लेता। अथवा उस परब्रह्म परमात्मा में विलिन नहीं हो जाता।

पुनर्जन्म की अवधारणात्मक आवश्यकता भी है। यदि जीवात्मा एक नित्य अपरिवर्तन शील सत्ता न हो तो और बार-बार जन्म ग्रहण न करे तो एक समस्या यह आएगी कि कर्म नियम की निरंतरता समाप्त हो जायेगी। क्योंकि यह देखा जाता है कि व्यक्ति इस जन्म में जो भी कर्म यथा जो भी पाप पुण्य कर्म करता है अगला जन्म उसी कर्म फल का परिणाम होता है।

Scanned By KagazScanner

इतना ही नहीं यह वर्तमान जन्म हमारे पिछले जन्म में किए गए कर्मों का परिणाम होता है इस लिए कर्मफल की निरंतरता के लिए के लिए भी पुनर्जन्म आवश्यक है। ऐसा नहीं होने पर कर्मफल किसी दूसरे प्राणी जिसने कर्म किया ही न हो या कर्मफल अप्राप्ति का दोष लगेगा। दर्शन शास्त्र में अथवा धर्म शास्त्रों में मृत्यु का अर्थ शरीर का अन्त अथवा नाश आत्मा का नाश अथवा अन्त नहीं।

वैदिक काल में ऋषियों की यह धारणा थी कि जो व्यक्ति अपना कर्म पूर्ण ज्ञान के साथ सम्पादित नहीं करता वह पुनः पुनः जन्म लेता है। उनके अनुसार मूर्च्छा की अवस्था में मनुष्य की आत्मा शरीर का साथ छोड़ देती है इस विचार के द्वारा वे मानने लगे मृत्यु के पश्चात आत्मा दूसरी शरीर धारण करता है इस प्रकार पुनर्जन्म की अवधारणा का विकास हुआ। पुनर्जन्म की अवधारणा न केवल वैदिक दर्शन में स्वीकार किया गया बल्कि अवैदिक दर्शन में भी इसे स्वीकार किया गया है।

Ram Narain Mishra
Assistant Prof.
S.B. College, Ara.

Scanned By KagazScanner